हिंदी–ग़ज़ल का कलापक्ष

डॉ. पूनम अग्रवाल
सहा0 अध्यापिका, हिन्दी विभाग
रमा जैन कन्या महाविद्यालय,
नजीबाबाद (बिजनौर)
Email: poonamrjc@gmail.com

प्राप्तिः 07.02.2021
स्वीकृतः 05.03.2021

सारांश

किसी भी विधा को अलग पहचान दिलाने एवं उसकी अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने में उस विधा का शिल्पविधान अत्यन्त महत्तवपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रत्येक विधा का अपना विशेष शिल्पविधान होता हैं। ग़ज़ल की भी अपनी एक विशेष प्रकृति होती है और उस प्रकृति के अनुरूप उसका शिल्पविधान है। चूँकि हिन्दी ग़ज़ल परम्परा फ़ारसी –उर्दू ग़ज़ल परम्परा से ही निर्वासित है इसलिए इसका व्याकरण भी फ़ारसी व्याकरण पर आधारित है। हिन्दी ग़ज़ल का परिदृश्य थोड़ा जटिल है। हिन्दी ग़ज़ल ऊपरी सतह पर एक नई विधा के रूप में विकसित हो रही है परन्तु इसकी कई अंतः धाराएँ हैं। एक ओर तो हिंदी की जनवादी ग़ज़लें जो आम आदमी को अभिव्यक्ति प्रदान करती है और दूसरी मंचीय या कवि सम्मेलनी ग़ज़ले जिनकी रचना के पीछे एक मात्र उद्देश्य है श्रोताओं की तालियाँ हासिल करना। इस प्रकार की ग़ज़ले समूचे हिन्दी ग़ज़ल को ही विकृत कर देती हैं।

प्रस्तावना

हिन्दी ग़ज़ल के कलापक्ष पर विचार करने से पूर्व हमें हिंदी ग़ज़ल के नामकरण से संबन्धित थोड़ी सी चर्चा कर लेनी चाहिए। हिन्दी ग़ज़ल को विशुद्व हिन्दी का स्वरूप प्रदान करने की दृष्टि से कुछ विद्वानों ने इनके नाम में परिवर्तन करने का प्रयास किया है। इसीलिए उन्होंने अपने–अपने ढंग से इसका नामकरण करने का प्रयास किया है। जैसे किसी ने इसे 'गीतिका' नाम से संबोधित किया तो किसी ने अनुगीत और किसी ने 'मुक्तिका'। इस प्रकार अनेक नामों से इसे संबोधित किया गया। परन्तु वास्तविकता यह है कि किसी भी अन्य नाम को अपनाने से उसके स्वरूप में स्वतः परिवर्तन आ जाता है। डा0 उर्मिलेश कहते है :– " हिन्दी ग़ज़ल से अभिप्राय उर्दू –कविता से आयातित उस काव्य विधा से है जो उर्दू ग़ज़ल की शैल्पिक काया में हिन्दी की आत्मा को प्रतिष्ठित करती हुई अपनी गेयता को सुरक्षा देती हुई, आधुनिक जीवन और परिवेश की विसंगतियों को नूतन भावबोध के साथ स्थापित करती हुई आगे बढ़ रही है। जिस ग़ज़ल में हिन्दी की प्रकृति और व्याकरण की सुरक्षा के साथ नवगीति बिंबो और प्रतीको का विधान है मेरी समझ में उसे हिन्दी ग़ज़ल मान लेने में कोई हर्ज़ नहीं हैं।"[1]

हिन्दी ग़ज़ल का शिल्प उर्दू–फ़ारसी की ग़ज़ल के शिल्प से भिन्न नहीं है। हिन्दी ग़ज़ल में भी पाँच या इससे अधिक विषम संख्या में शेर होते हैं। हिन्दी में शेर को कुछ लोगों ने द्विपदी कहा है। गोपालदास नीरज ने शेर को द्विपदिका नाम दिया है। प्रत्येक शेर में दो मिसरे होते है और विषय की दृष्टि से प्रत्येक शेर अपने आप में स्वतन्त्र इकाई होता है।

काफिया और रदीफ का निर्वाह भी उसी प्रकार किया जाता है जिस प्रकार उर्दू फ़ारसी ग़ज़ल में। मतले और मक्ते की परम्परा भी उर्दू ग़ज़लों की भाँति हिन्दी ग़ज़ल में मिलती है। मतले को कुछ हिन्दी विद्वानों ने उदयिका 'आरम्भिका' आदि नाम दिये हैं। ग़ज़ल का अन्तिम शेर मक़्ता कहलाता है जिसमें ग़ज़लकार का 'तख़ल्लुस' अर्थात् उपनाम भी अंकित होता है। हिन्दी ग़ज़ल के मक़्ते के संबध में हम यह कह सकते है कि हिन्दी के कुछ ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में अपने उपनाम का प्रयोग नहीं किया है। अतः इन ग़ज़लकारों के अंतिम शेर मक़्ते की श्रेणी में नहीं रखे जा सकते। परन्तु कुछ ग़ज़लकारो ने अपनी ग़ज़लो में 'उपनाम' का प्रयोग अवश्य किया है। उदाहरणार्थ

'कुँअर' की आँख है यह अश्क में क्योंकर न भीगेगी,
न जो भीगी कभी जल में कमल की पंखुड़ी होगी।[2]

हिंदी ग़ज़ल में प्रयुक्त भाषा

सरलता, सहजता, सरसता और प्रभावोत्पदकता ग़ज़ल की भाषा के आवश्यक गुण माने गये हैं। यदि फ़ारसी साहित्य के इतिहास का अध्ययन किया जाए तो ज्ञात होगा कि रौदकी से लेकर सादी शिराजी और अन्य परवर्ती कवियों की ग़ज़लों की भाषा बड़ी जटिल है। उर्दू ग़ज़ल, फ़ारसी ग़ज़लों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय हुई, उसका कारण यह है कि उस युग की फ़ारसी ग़ज़लों की भाषा में अनेक जटिलताएँ थीं जैसे भारी–भरकम एवं क्लिष्ट शब्दों के साथ सामाजिक शब्दावली का अत्यधिक प्रयोग, जिसके कारण ग़ज़ल सर्वसाधारण की पहुँच से बाहर थी। परन्तु जैसे–जैसे ग़ज़ल की भाषा में सरलता आती गई वैसे–वैसे ग़ज़ल आम आदमी में लोकप्रिय होती गई। भाषा की दृष्टि से हिन्दी ग़ज़ल अधिक लोकप्रियता अर्जित कर सकेगी। ग़ज़ल की भाषा मुहावरेदार होनी चाहिए। मुहावरे और कहावतें ग़ज़ल में संक्षिप्तता, रोचकता एवं प्रभावोत्पदकता उत्पन्न कर देते हैं। हिन्दी ग़ज़लों में भी मुहावरों और कहावतों का आवश्यकतानुसार प्रयोग हुआ है। उदाहरणार्थ

रेशमी सपने बुने थे आसमाँ कदमों मे था,
इस तरह के मंजरो का सिलसिला दोनों में था। [3]

प्रस्तुत शेर में 'रेशमी सपने' और आसमाँ कदमों में' मुहावरों का प्रयोग हुआ है।

ग़ज़ल की भाषा का एक अन्य महत्तवपूर्ण एवं आवश्यक गुण भाषा का प्रतीकात्मक होना है। हिंदी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लो में इस विशेषता का पूरा ध्यान रखा है। उदाहरणार्थ

"सूरज समझौता कर बैठा है तारों के साथ
अब दिन को भी जीना होगा अंधियारो के साथ "[4]

इस शेर की भाषा पूर्णतया प्रतीकात्मक है जिसका तात्पर्य यही है कि जब प्रकाश देने वाला ही अपने प्रकाश का सौदा कर बैठे तो सिवाय अंधेरे के और किस चीज़ की उम्मीद की जा सकती है। हिंदी ग़ज़ल में दो प्रकार की भाषा का प्रयोग मिलता है– एक संस्कृतनिष्ठ भाषा और दूसरी उर्दू मिश्रित भाषा हिन्दी ग़ज़लो में यथास्थान, तद्भव, देशज आदि शब्दों का प्रयोग भी मिलता है।

हिन्दी ग़ज़ल का छंद–विधान

ग़ज़ल चाहे वह हिंदी में हो या उर्दू में या अन्य किसी भाषा में, छंदबद्धता उसकी सर्वप्रथम विशेषता है। छंद, वास्तव में एक तरह के लयात्मक स्वरांश है, जिन्हें जोड़कर अलग अलग बह्रे बना ली जाती है। उूर्द में कुल उन्नीस मूल बह्रे है। जिनमें लगभग चालीस मिश्रित बह्रे बनायी गई है। हिन्दी ग़ज़लो में प्रयुक्त बहरें उर्दू–फ़ारसी की बह्रो पर ही आधारित है क्योंकि मात्र भाषा बदल जाने से ग़ज़ल की आधारभूत संरचना तो नहीं बदली जा सकती। हिन्दी ग़ज़लो में उर्दू की जो बह्रे अति लोकप्रिय एवं प्रचलित है उनके नाम हैं – बह्रे–रमल, बह्रे–हज़ा, बह्रे रज़ज, बह्रे मुतकारिब, बह्रे मजास। हिंदी ग़ज़लो में इन बह्रो का विविध रूपों में प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए बह्रे–रमल पर आधारित हिन्दी ग़ज़ल का शेर प्रस्तुत है –

बुझ गई बिजली तो छत पर चाँदनी अच्छी लगी,
मिच गई आँखे तो सपने रू–ब–रू होने लगे।

उपर्युक्त पंक्तियों में प्रयुक्त बह्रे रमल की रूक्न व्यवस्था इस प्रकार है –

फ़ाइलातुन, फ़ाइलातुन, फ़ाइलातुन, फाइलुन

कुछ ग़ज़लकारों ने हिन्दी ग़ज़ल को विशुद्ध हिन्दी ग़ज़ल का स्वरूप देने की दषष्टि से उसमे संस्कृत के मात्रिक छंदो का प्रयोग किया है जैसे– मन्दाक्रांता। हिन्दी ग़ज़लो में कहीं–कहीं ग़ज़ल की बह्रो के नियमों का सही रूप में अनुपालन नही किया गया। संभवतः इसके पीछे कारण हिन्दी ग़ज़लकारो में ग़ज़ल के व्याकरण के ज्ञान का अभाव रहा है।

प्रतीक विधान

ग़ज़ल शिल्प के उपकरणों में प्रतीक सबसे आवश्यक एवं सशक्त माध्यम है। प्रतीक अनुभूति को सघन बना देते हैं। हिन्दी ग़ज़ल में भी अभिव्यक्ति की प्रभावोत्पदकता बढ़ाने के लिए वाहक होते हैं। हिन्दी ग़ज़लो में अधिकतर उर्दू फ़ारसी ग़ज़ल में प्रयुक्त ईरानी सभ्यता के प्रतीकों का प्रयोग किया जा रहा है जैसे पतझड़, गुलशन, चमन, आसमाँ, रात, सुबह, मयखाना आदि। परन्तु आधुनिक हिन्दी ग़ज़लकार अपनी ग़ज़लों में उन्हीं प्रतीकों का प्रयोग करने का प्रयास करते है, जो भारतीय परिवेश और जनजीवन से संबद्व है। प्रतीकात्मकता के संबध में अपनी टिप्पणी करते हुए डा0 गिरिराज शरण अग्रवाल कहते है –" ग़ज़ल की कला संकेतों, उपमाओं और प्रतीकों के प्रयोग की कला है।" एक अन्य स्थान पर लिखते हैं– ग़ज़ल में जो शब्द प्रयुक्त होते है वे अपने अर्थो में शाब्दिक न होकर प्रतीकात्मक होते है। [5]

यद्यपि हिन्दी ग़ज़ल काव्य और शिल्प की दृष्टि से अपनी अलग पहचान बना चुकी है किंतु आज भी काव्य प्रतीकों के विधान पर उर्दू–फ़ारसी के प्रतीकों का प्रभाव देखने को मिलता

है। प्रतीकों के प्रयोग की कुशलता के साथ–साथ प्रतीकों की ग्राह्यता बनाए रखना भी अत्यन्त आवश्यक हैं हिन्दी ग़ज़लकारों ने जीवन को रूपायित करने के लिए अपने आस–पास के परिवेश से ही प्रतीकों का चयन किया है। वस्तु प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने जीवन और उसके परिवेश को रूपायित किया है तो भाव प्रतीक अंतर्मन के संघर्ष, चिंता और अनुभूतियों को आकार प्रदान करते हैं।

ग़ज़ल में संक्षिप्तता, लाक्षणिकता, विचारात्मकता एंव मिथकों का प्रयोग

संक्षिप्तता ग़ज़ल की प्राथमिक अनिवार्यता है। ग़ज़लकारो को कम से कम शब्दों में गहन भावों, अनुभूतियों एवं वास्तविकताओं को अभिव्यक्त करना होता है। यही कारण हैं कि ग़ज़ल में प्रतीक इतने महत्तवपूर्ण हो जाते हैं। ग़ज़ल में प्रतीकों के साथ – साथ लाक्षणिक अभिव्यंजना भी अत्यन्त महत्तवपूर्ण है। उदाहरण के लिए एक शेर देखिए –

"मैं नदी हूँ, पत्थरों ने रोक पाया मुझे,
पूछिए मत इस सफर में क्या बचा, क्या रह गया ?"[6]

हिन्दी ग़ज़लों में अनेक स्थानों पर मिथकों का प्रयोग भी किया गया है। जब साहित्यकार युगीन संदर्भो को स्पष्ट और सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए पौराणिक संदर्भो का प्रतीक रूप में प्रयोग करता है तो उसे मिथक का प्रयोग कहा जाता है हिन्दी ग़ज़लों में भी कथ्य की अभिव्यक्ति को और भी अधिक सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने के लिए पौराणिक कथाओं का प्रतीक रूप में सहारा लिया गया है। युगीन मानव की पीड़ा कुंठा, भय आंशका, घुटन आदि को व्यक्त करने के लिए हिन्दी ग़ज़लकारों ने मिथकों का यथास्थान सफल प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ कुँअर बैचेन का ये शेर प्रस्तुत है।

"बात दिल की किस तरह खोलूँ तुम्हारे सामने,
मैं सुदामा की तरह हूँ बात तंदुल की तरह।" [7]

इसी क्रम में शेर जंग गर्ग की ग़ज़ल का एक शेर दृष्टव्य है, जिसमें वर्तमान समय में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं नारी के प्रति बदले दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने के लिए महाभारत के द्रौपदी चीरहरण मिथक का प्रयोग किया है।

"कृष्ण के देश में दुःशासन
कब तलक यों हरेगें चीरो को।[8]

बिंब एवं अप्रस्तुत विधान

वस्तु एवं भाव के प्रभावशाली संप्रेषण की दृष्टि से बिंब काव्य का अत्यन्त महत्तवपूर्ण तत्व है। बिंब वस्तु या भाव को साकार रूप प्रदान कर पाठक के सामने लाकर खड़ा कर देते है और उसे संवेद्य बना देते है। बिंब सदैव किसी वस्तु का ही बनता है। किसी भाव या विचार को अवगति के लिए हमें किसी वस्तु का मानसिक सहारा लेना पड़ता है। वह वस्तु उस भाव या विचार विशेष को हमारे समक्ष प्रत्यक्ष कर देती है।

इस प्रकार बिंब एक प्रकार से किसी भाव आदि के मानसिक प्रत्यक्षीकरण का माध्यम

है। हिंदी ग़ज़ल का बिंब विधान भी अत्यन्त सशक्त बन पड़ा है। युगीन मानव के जीवन का सच्चा चित्राकंन प्रस्तुत करता हुआ सटीक बिंब विधान का एक उदाहरण देखिए–

इस सुलगती धूप में साया भी जलता सा लगा
और फिर पहचान का सूरज भी ढलता सा लगा
एक पल रिश्तों का मौसम एक झुलसन धूप की
लौह तक विश्वास का मुझको पिघलता सा लगा।[9]

हिंदी ग़ज़ल में संगीतात्मकता

ग़ज़ल और संगीत का सनातन सम्बन्ध है ग़ज़ल अपने परम्परागत रूप में संगीत से गहरे से सम्बद्व है। 'ग़ज़ल गायकी' के नाम से एक गान शैली भी प्रसिद्ध है। ग़ज़ल दो रूपों में कही जाती है एक तो ग़ज़ल पढ़ी जाती है दूसरी तरन्नुम से कही जाती है। चूँकि संगीतात्मकता ग़ज़ल का प्रमुख गुण है। इसलिए हिंदी–ग़ज़लों में भी यह गुण आना स्वाभाविक है। उर्दू–फ़ारसी ग़ज़ल की भाँति हिन्दी ग़ज़ल में भी संगीत का अत्यधिक महत्तव है। गेयता और लयात्मकता अच्छी ग़ज़ल के आवश्यक गुण है।

हिंदी ग़ज़ल में रस एवं अंलकारो का प्रयोग

ग़ज़ल का प्रमुख रस श्रृंगार रहा है। ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ ही प्रेमभरी बातों का द्योतक है। हिन्दी ग़ज़ल में भी श्रृंगारपरक ग़ज़लें लिखी जा रही है। परन्तु हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में एक अन्य धारा और देखने को मिलती है, जिसके अन्तर्गत बाह्य जीवन की विंसगितियों को चित्रित किया जाता है। हिन्दी ग़ज़लों में अधिकतर परिवेशगत यथार्थ का ही चित्रांकन किया गया है। अतः हिन्दी ग़ज़लों में श्रषंगार के अतिरिक्त करूण आदि अन्य रसों का भी समावेश हुआ है। इसके अतिरिक्त हिंदी में हास्यापद विषयों को भी ग़ज़ल का विषय बनाया गया है। हास्य के माध्यम से व्यंग्य रूप में यथार्थ को चित्रित करने के लिए हिन्दी ग़ज़लों का भी सहारा लिया गया है जैसे

जुदाई में भी हमने वस्ल की तिकड़म निकाली है
तेरी लेटेस्ट फोटो अपने सीने से लगा ली है
वो संसद आज की तहज़ीब में संसद नहीं जिसमें
न चप्पल है, न जूता है, न थप्पड़ है न गाली है।[10]

हिन्दी ग़ज़ल में प्रयुक्त शैली

हिन्दी ग़ज़ल के शिल्पविधान पर समग्र रूप से विचार करने के बाद यही निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दी ग़ज़लों में लाक्षणिक, प्रतीकात्मक, संकेतात्मक, शैली का प्रयोग मिलता है। ग़ज़ल ग़ज़लाकार की व्यक्तिगत शैली का भी विशेष महत्त्व है। व्यक्तिगत शैली से अभिप्राय है 'ग़ज़लकार का अभिव्यक्ति का निजी अंदाज़'। इस संबंध में यह टिप्पणी दृष्टव्य है–

'ग़ज़ल में व्यक्तिगत शैली अथवा ग़ज़लकार में निजी एवं सशक्त लहजे का विशेष महत्त्व है। ... ग़ज़ल के शेरों पर ग़ज़लकार की व्यक्तिगत छाप यदि साधारण है, अद्भुत, गहरी एवं आकर्षक नहीं है, सशक्त एवं प्रभावपूर्ण नहीं है तो वह साहित्य में कोई बड़ा स्थान नहीं बना

सकेगी'। ग़ालिब ने ग़ज़ल ने ग़ज़ल में अभिव्यक्ति के अंदाज़ को सबसे ज़्यादा महत्त्व देते हुए कहा था–

है और भी दुनिया में सुखनवर बहुत अच्छे,
कहते हैं कि ग़ालिब का है अंदाज़े बयाँ और।[11]

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि चूँकि हिन्दी ग़ज़ल फ़ारसी उर्दू ग़ज़ल से ही आयातित है इसलिए शिल्प की दृष्टि से हिन्दी ग़ज़ल का स्वरूप उर्दू फ़ारसी ग़ज़ल के अति समीप है। हिन्दी ग़ज़ल में ग़ज़ल के पाँचो अंगो को स्वीकार किया गया है शेर, मतला, मक़्ता, रदीफ और काफ़िया। हिन्दी ग़ज़ल का प्रत्येक शेर अपने आप में स्वतंत्र होता है उसके प्रत्येक शेर में नवीन विचार विषय अंतर्निहित होता है। ग़ज़ल में शेरों के शब्द–सौष्ठव पर विशेष ध्यान दिया जाता हैं। उर्दू फ़ारसी ग़ज़ल की भाँति हिन्दी ग़ज़ल में भी लैंगिक संकेत प्रदान करने वाले शब्दों का प्रयोग वर्जित माना गया है।

हिन्दी ग़ज़ल में अधिकतर भारी भरकम शब्दों के प्रयोग से बचकर आम आदमी की दैनिक बोलचाल की प्रवाहपूर्ण भाषा का ही प्रयोग किया गया है। हिन्दी ग़ज़ल में प्रेम एवं वासना जैसे परम्परागत ग़ज़ल के विषयों को छोड़कर समाज, राजनीति, धर्म शासन, सर्वहारा वर्ग की समस्याओं, विसंगतियों एवं विद्रूपताओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। हिंदी–ग़ज़लकारों ने अपने भाव, विचार–चिंतन की अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकों एवं बिंबों का सहारा लिया है साथ ही उन्होंने अभिधा से बचते हुए लक्षणा एवं व्यंजना का आश्रय लिया है। उर्दू–फ़ारसी ग़ज़लों की भाँति अनुभूति की तीव्रता और संगीतात्मकता हिंदी–ग़ज़ल के प्राण हैं। यद्यपि हिन्दी ग़ज़ल का शिल्पगत स्वरूप उर्दू फ़ारसी ग़ज़ल के शिल्प विधान पर आधारित है परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि हिन्दी ग़ज़ल की उर्दू फ़ारसी गजल से भिन्न अपनी कोई पहचान नही है। हिन्दी ग़ज़ल को विशुद्व हिन्दी स्वरूप देने और उर्दू फ़ारसी ग़ज़ल से पृथक उसे अपनी विशेष पहचान देने की हठ में कुछ लोग ग़ज़ल की प्रकृति से छेड़छाड़ कर बैठते है जिससे ग़ज़ल का स्वरूप ही विकृत हो जाता है। उसका ग़ज़ल तत्त्व ही नष्ट हो जाता है। हिंदी–ग़ज़ल को सर्वथा नवीन रूप प्रदान करने की हठ में और ग़ज़ल व्याकरण में अपने अल्पज्ञान के कारण हिंदी–ग़ज़ल की श्रेणी में रखने में संकोच होता है। वास्तव में, इस विषय में हिंदी–ग़ज़लकारों को संकीर्णता का नहीं वरन् उदारता का परिचय देना होगा। यदि वास्तव में वे हिन्दी ग़ज़ल को ग़ज़ल के उच्च स्तर तक ले जाना चाहते हैं तो उन्हें अपने भीतर ग़ज़लिया स्वभाव उत्पन्न करना होगा जिसके लिए उन्हें निरंतर अभ्यास और कड़े अध्ययन की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. *हिंदी–ग़ज़ल : उद्भव और विकास*, डा. रोहिताश्व अस्थाना, पृ0 **142**
2. *हिंदी–ग़ज़ल यात्रा : भाग एक*, सं0 डा. गिरिराजशरण अग्रवाल, डा. अजय जनमेजय, पृ0 **50**
3. *हिंदी–ग़ज़ल यात्रा : भाग दो*, सं0 डा. गिरिराजशरण अग्रवाल, डा. अजय जनमेजय, पृ0 **73**
4. *हिंदी–ग़ज़ल यात्रा : भाग दो*, सं0 डा. गिरिराजशरण अग्रवाल, डा. अजय जनमेजय, पृ0 **81**

5. *हिंदी–ग़ज़ल यात्रा : भाग दो,* सं0 डा. गिरिराजशरण अग्रवाल, डा. अजय जनमेजय, पृ0**11**
6. *सन्नाटे में गूंज* – डा. गिरिराजशरण अग्रवाल पृ0 **22**
7. *महावर इंतज़ारो का* – डा. कुँवर बेचैन पृ0 **57**
8. *हिंदी–ग़ज़ल यात्रा : भाग दो,* सं0 डा. गिरिराजशरण अग्रवाल, डा. अजय जनमेजय, पृ0 **162**
9. *भीतर शोर बहुत है :* डा. गिरिराजशरण अग्रवाल, पृ0 **83**
10. *हिंदी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें,* सं0 डा. गिरिराजशरण अग्रवाल, पृ0 **42**
11. *ग़ज़ल और उसका व्याकरण* डा. गिरिराजशरण अग्रवाल निश्तर ख़ानकाही, पृ0 **35**